बड़े स्केल की फिल्मों में दीपिका पादुकोण का जलवा

बॉलीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोण फिल्म किंग और एटली की फिल्म में जलवा बिखेरती नजर आयेंगी. दीपिका की आने वाली फिल्मों की सूची में इस समय भारतीय सिनेमा की सबसे बड़ी फिल्मों में से कुछ शामिल हैं. एक फिल्म में वह छठी बार शाहरुख खान के साथ नजर आएंगी, सालों में दोनों की जोड़ी अब किसी रॉयल पार्टनरशिप से कम नहीं रही है. दूसरी तरफ वह निर्देशक एटली और अल्लू अर्जुन के साथ काम कर रही हैं, जो एक जबरदस्त पैन-इंडिया फिल्म होने वाली है. इन दोनों प्रोजेक्ट्स के साथ दीपिका इस समय इंडस्ट्री की सबसे ज्यादा चर्चा में रहने वाले नामों में पूरी मजबूती से बनी हुई हैं.

दीपिका के लिए यह साल काफी बिज़ी रहने वाला है, क्योंकि उनके पास दो बड़े मेगा प्रोजेक्ट्स हैं और वह लगातार बॉलीवुड की क्वीन बनी हुई हैं. चाहे वह बड़े सुपरस्टार्स के साथ नजर आएं और अपनी क्रिएटिव ताकत जोड़ें, या फिर स्टार पावर से भरपूर ब्लॉकबस्टर फिल्मों में अपनी मौजूदगी दर्ज कराएं, दीपिका अब सच में एक पैन-इंडिया फेनोमेनन बन चुकी हैं. बॉक्स ऑफिस पर भी उन्होंने लगातार हिट्स देकर यह साबित किया है कि नंबरों के साथ उनका राज कायम है. आने वाला वक्त उनके लिए और भी ज्यादा रोमांचक होने वाला है, जिसे देखने के लिए हर कोई उत्साहित है.

पिछले कुछ सालों में दीपिका ने ऐसी फिल्मोग्राफी तैयार की है, जिसमें भव्यता भी है और दमदार कंटेंट भी. पद्मावत, जवान और फाइटर से लेकर कल्कि 2898 एडी और सिंघम अगेन तक, उनके फिल्म चुनने के फैसले हर बार क्रिएटिव और कमर्शियल दोनों तरह से असरदार रहे हैं.

चाहे वह सबसे बड़े सितारों के साथ स्क्रीन शेयर कर रही हों या अपनी मौजूदगी से बड़ी कहानियों को संभाल रही हों, दीपिका हर प्रोजेक्ट को अपनी शांत लेकिन मजबूत पकड़ से ऊंचा ले जाती हैं.

फिल्म 'जन नायकन' पर मंडराया संकट

तमिल सुपरस्टार थलापति विजय की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'जन नायकन' की रिलीज को लेकर कानूनी विवाद गहरा गया है. फिल्म को सेंसर बोर्ड से सर्टिफिकेट मिलने में हो रही देरी के कारण मामला अब देश की सर्वोच्च अदालत तक पहुँच चुका है. निर्माताओं ने 18 दिसंबर को फिल्म बोर्ड के सामने पेश की थी, जहाँ परीक्षक समिति ने यू/ए (/ए) सर्टिफिकेट की सिफारिश की थी. हालांकि, कट्स लागू होने के बावजूद बोर्ड ने सर्टिफिकेट जारी करने के बजाय मामला रिवाइजिंग कमेटी को सौंप दिया, जिससे फिल्म की रिलीज अधर में लटक गई.

इस प्रशासनिक देरी के खिलाफ केवीएन प्रोडक्शंस ने मद्रास हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था. हाईकोर्ट की सिंगल बेंच ने सेंसर बोर्ड को फटकार लगाते हुए तुरंत सर्टिफिकेट जारी करने का आदेश दिया था, लेकिन उसी दिन डिवीजन बेंच ने इस फैसले पर रोक लगा दी. डिवीजन बेंच का मानना था कि बोर्ड को अपना पक्ष रखने का पर्याप्त अवसर नहीं मिला. इस अदालती दांव-पेंच से परेशान होकर निर्माताओं ने सुप्रीम कोर्ट में स्पेशल लीव पिटीशन दायर की है, जिस पर 15 जनवरी को सुनवाई होनी तय है.

राधिका आप्टे ने थकाऊ वर्किंग कल्चर पर निशाना साधा

बॉलीवुड में काम के घंटों को लेकर चल रही बहस अब और तेज हो गई है. दीपिका पादुकोण द्वारा 8 घंटे की शिफ्ट की मांग के बाद, अब मशहूर अभिनेत्री राधिका आप्टे ने भी फिल्म इंडस्ट्री के थकाऊ वर्किंग कल्चर पर निशाना साधा है. राधिका ने एक साक्षात्कार में खुलासा किया कि इंडस्ट्री में कलाकारों से बिना सवाल किए 14 से 16 घंटे काम करने की उम्मीद की जाती है, जो न तो स्वास्थ्य के लिए ठीक है और न ही नैतिकता के लिहाज से सही. उन्होंने स्पष्ट किया कि इस सिस्टम के कारण उन्हें कई बड़े प्रोजेक्ट्स तक छोड़ने पड़े हैं.

राधिका आप्टे ने विशेष रूप से कामकाजी माता-पिता (वर्किंग पेरेंट्स) की समस्याओं पर जोर दिया. उन्होंने कहा कि किसी भी कलाकार से यह उम्मीद करना गलत है कि वह पूरे हफ्ते अपने बच्चे को देखे बिना लगातार शूटिंग करता रहे. उन्होंने नैनी रखने या बच्चे को सेट पर लाने जैसे सुझावों को व्यावहारिक समाधान मानने से इनकार कर दिया. राधिका के अनुसार, फिल्म इंडस्ट्री को 'पेरेंट्स फ्रेंडली' बनाने के लिए सबसे पहले काम के घंटों को तर्कसंगत बनाना होगा, ताकि कलाकार अपने परिवार और बच्चों के लिए समय निकाल सकें.

अपनी शर्तों पर अडिग रहते हुए राधिका ने बताया कि अब वे 12 घंटे से ज्यादा की शिफ्ट (जिसमें मेकअप और ट्रैवल शामिल हो) के लिए राजी नहीं होतीं. वे हफ्ते में 5 दिन काम और नियमित वीकली ऑफ की मांग करती हैं. राधिका ने स्वीकार किया कि इन सख्त नियमों के कारण कई निर्माता उनसे नाराज रहते हैं और उनके हाथ से कई फिल्में चली जाती हैं. बावजूद इसके, वे मानती हैं कि मानसिक संतुलन और सेहत से समझौता कर काम करना सही नहीं है. उनकी यह बेबाक राय पूरी इंडस्ट्री के लिए एक बड़ा संदेश है.

'महादेव एंड सन्स' खुलता है एक दिलचस्प पारिवारिक गाथा

कुछ रिश्ते मिसाल बन जाते हैं... और कुछ मिसालों का बोझ बनकर रह जाते हैं.' इस भाव को जीवन्त करते हुए कलर्स प्रस्तुत करता है 'महादेव एंड सन्स', एक दिलचस्प पारिवारिक ड्रामा जो निषिद्ध प्रेम से जन्मा है और जीवनभर के परिणामों से आकार लेता है. कहानी का मंच है हरदोई का मंदिर नगर, जहाँ महादेव - एक अनाथ जो बाजपेयी परिवार में नौकर बनकर आया था- समय के साथ नगर का सबसे सम्मानित और धनी व्यक्ति बन गया. अपने मालिक की बेटी विद्या से उसका निषिद्ध प्रेम विद्या से सब कुछ छीन ले गया- उसका घर, उसका नाम और उसकी विरासत. अपमानित और त्यागी गई इस जोड़ी ने अनुशासन और परंपरा के सहारे, ईंट दर ईंट अपनी जिंदगी को फिर से बनाया, कटुता के बजाय गरिमा को चुना. यह त्याग की यात्रा धीरे-धीरे एक घनिष्ठ, खुशहाल परिवार में बदल गई, जहाँ दिन की शुरुआत और अंत साझा भोजन, मंदिर दर्शन, उत्सव और अनकहे संस्कारों से होता है.

'घरवाली पेड़वाली में फेस्टिवल, फन और मस्ती

'घरवाली पेड़वाली' में मकर संक्रांति का त्योहार हंसी, भावनाओं और हल्के-फुल्के हंगामे से भरपूर होने वाला है. शादी के बाद अपनी पहली मकर संक्रांति मनाने जा रही सावी (सीरत कपूर) के लिए यह दिन बेहद खास है. गीता मां (गीता बिष्ट) सावी को तिल के लड्डू बनाने और पूजा करने की ज़िम्मेदारी सौंपती हैं. लेकिन यह सिर्फ एक रस्म नहीं है. पूजा के बाद सावी को मिलेंगी 'घर की चाबियां', जो भरोसे और घर की नई ज़िम्मेदारियों का प्रतीक हैं. हालांकि, चीजें उतनी आसान नहीं रहने वालीं. घबराई हुई सावी से हालात संभलने के बजाय और उलझ जाते हैं, वहीं लतिका (प्रियंवदा कांत) की पुरानी असुरक्षाएं फिर से सिर उठाने लगती हैं. लड्डू, प्रतिस्पर्धा और ढेर सारी हंसी के बीच क्या सावी अपने इस खास पल में खुद को साबित कर पाएगी?

अमनदीप ने बताया मकर संक्रांति प्रपोजल

'गंगा माई की बेटियां' मकर संक्रांति का जश्न इस बार एक खास अंदाज में मनाने जा रहा है, वो भी एक मजेदार ट्विस्ट के साथ. शो में लीड कलाकार अमनदीप सिद्धू (स्नेहा) और शीज़ान खान (सिद्धू) त्यौहार के दौरान पतंगबाजी की एक तेज और मजेदार मुकाबलेबाजी करते नजर आएंगे. इसी हंसी-मजाक और धूमधड़ाके के बीच सिद्धू आखिरकार स्नेहा से अपने दिल की बात कहने का फैसला करता है, वो भी एक अलग और प्यारे तरीके से, जब वो पतंग पर अपनी फीलिंग्स लिखकर उसे आसमान में उड़ाता है. इस ऑन-स्क्रीन पल से जुड़ी एक प्यारी सी रियल लाइफ याद भी सामने आई है, क्योंकि अमनदीप सिद्धू को भी अपनी रील लाइफ की तरह ऑफ-स्क्रीन मकर संक्रांति पर एक मीठा और यादगार प्रपोज़ल मिल चुका है.

'बॉर्डर 2' में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं अहान शेट्टी

अहान शेट्टी अपने पिता सुनील शेट्टी की विरासत को आगे बढ़ाते हुये 'बॉर्डर 2' में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं. मूल बॉर्डर फिल्म में प्रमुख भूमिका निभा चुके सुनील शेट्टी अपने पुत्र को बॉर्डर 2 का हिस्सा बनते देख बेहद गर्व महसूस कर रहे हैं.

सुनील शेट्टी ने शहर में 'जाते हुए लम्हों' के जारी किये जाने के मौके पर शिरकत की. यह गाना मूल बॉर्डर फिल्म के लोकप्रिय गीत 'तो चलूं' को एक नये अंदाज में पेश किया गया है. कार्यक्रम में सुनील शेट्टी ने अहान शेट्टी और पूरी 'बॉर्डर 2' टीम का दिल से समर्थन किया और पैपराज़ी के लिए अपने पुत्र के साथ एक खासतौर से तस्वीरें भी खिंचवाईं. कार्यक्रम से पहले अहान शेट्टी ने अपने पिता के साथ खिंचवाई कुछ तस्वीरें इंस्टाग्राम पर डालते हुये लिखा, 'यह खास है. जाते हुए लम्हों - ऑडियो अब जारी हो गया है.'

बॉर्डर 2 के निर्देशक अनुराग सिंह हैं और गुलशन कुमार और टी-सीरीज़ ने जेपी दत्ता की जेपी फिल्म्स के सहयोग से इसे प्रस्तुत किया है. फिल्म में सनी देओल, वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ और अहान शेट्टी जैसे सितारे हैं और यह 23 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज़ होने वाली है. हाल ही में जैसलमेर में एक कार्यक्रम के दौरान सनी देओल ने अपने पिता धर्मेंद्र की युद्ध फिल्म हकीकत के अपने जीवन पर पड़े गहरे प्रभाव के बारे में बात की और बताया कि इसी फिल्म ने उन्हें बॉर्डर बनाने के लिए प्रेरित किया.

डॉ. मोहित के किरदार से कहानी में आएंगे नए मोड़

तुम से तुम तक', जिसमें शरद केलकर और निहारिका चौकसे अहम भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं, फिलहाल कहानी ने एक भावुक मोड़ लिया है, जहां अनु को ये सच्चाई पता चलती है कि आर्यवर्धन पहले शादीशुदा था और उसकी पत्नी राजनंदिनी अब इस दुनिया में नहीं है. इस सच के सामने आने से जहां अनु को आर्यवर्धन के अतीत को समझने का मौका मिलता है, वहीं मीरा के मन में उलझन और जलन बढ़ने लगती है, क्योंकि वो अनु और आर्यवर्धन के बीच बढ़ती नजदीकियों को साफ महसूस करने लगती है. इससे कहानी में हलचल और बढ़ जाती है. इसी बीच शो में एक नए किरदार की एंट्री होने जा रही है, जो कहानी में ताजगी और दिलचस्प मोड़ लेकर आएगा. एक्टर रवजीत सिंह शो में डॉ. मोहित के किरदार में शामिल हो चुके हैं, जो एक संवेदनशील और बेहद काबिल हार्ट सर्जन हैं. अपने किरदार के बारे में बात करते हुए रवजीत सिंह बताते हैं, 'मैं डॉ. मोहित का किरदार निभा रहा हूं, जो एक हार्ट सर्जन है. उसकी मुलाकात अनु और उसके परिवार से पहली बार तब होती है, जब वे अस्पताल आते हैं. ये किरदार अनु और आर्यवर्धन की जिंदगी में कई ऐसे मोड़ लाएगा, जो कहानी को आगे बढ़ाएंगे.

फैंटेसी तब काम करती है, जब वह भावनात्मक रूप से सच्ची लगे : सूरज सिंह

फिल्म 'राहु केतु' के निर्माता सूरज सिंह का कहना है कि फैंटेसी तब काम करती है, जब वह भावनात्मक रूप से सच्ची लगे. भारतीय सिनेमा में एक अलग पहचान बना रहे बीलाइव प्रोडक्शंस के निर्माता सूरज सिंह, ऐसी कहानियों का समर्थन करते हैं, जो परंपरागत सोच को चुनौती दे, लेकिन साथ ही दर्शकों से भावनात्मक रूप से जुड़ी भी रहे. फिलहाल उनकी आगामी फिल्म 'राहु केतु' उनके इसी दृष्टिकोण का सशक्त उदाहरण है, जो एक हाई-कॉन्सेप्ट फैंटेसी ड्रामा होने के बावजूद भव्य कल्पनाशील दुनिया को मानवीय भावनाओं के साथ संतुलित करता है. फिलहाल पारंपरिक पौराणिक फॉर्मूलों पर निर्भर रहने के बजाय, सूरज सिंह एक ऐसी सिनेमैटिक दुनिया गढ़ने पर ध्यान दे रहे हैं, जो नई और पूरी तरह कहानी-केंद्रित हो. यही वजह है कि उन्होंने 'राहु केतु' के ज़रिए दर्शकों को ऐसी भव्यता देने की कोशिश की है, जो कहानी को मनोरंजक बनाने के साथ-साथ भावनात्मक रूप से भी गहराई से जोड़े.

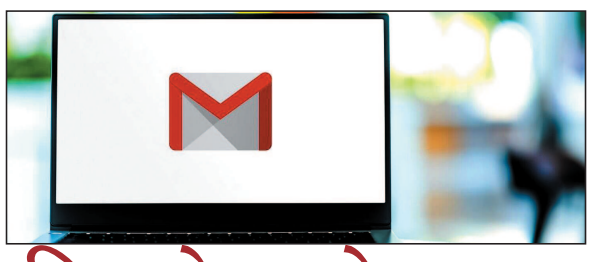

बिना डेटा खोए नया जीमेल एड्रेस बनाएं

गूगल ने हाल ही में ऐलान किया है कि अब यूजर्स अपना पुराना जीमेल एड्रेस बदलकर नया ईमेल आईडी सेट कर सकते हैं. यह बदलाव तुरंत लागू हो जाता है और अकाउंट का कोई भी डेटा नहीं मिटता, सब कुछ पहले जैसा ही रहता है. यह अपडेट इसलिए खास है क्योंकि अब लोग अपनी पुरानी या शर्मिंदगी वाली ईमेल आईडी को आसानी से बदल सकते हैं.

नया एड्रेस सेट करने के बाद ईमेल अपने-आप उसी पर आने लगेंगे, इसके लिए अलग से कोई सेटिंग करने की जरूरत नहीं होगी. यह फीचर धीरे-धीरे सभी यूजर्स के लिए रोलआउट किया जा रहा है और कुछ अकाउंट्स में यह पहले ही उपलब्ध है. आइए आपको बताते हैं कि आपके अकाउंट में यह अपडेट आया है या नहीं और ल्द्धड्डद्बद्य एड्रेस कैसे बदला जा सकता है.

जीमेलएड्रेस अपडेट क्यों करें?- क्या कभी लगा है कि आपका पुराना ईमेल, जैसे coolkid2005@gmail.com, अब थोड़ा आउटडेटेड हो गया है? गूगल का नया फीचर आपको बिना एक भी ईमेल या फोटो खोए अपना जीमेल एड्रेस बदलने की सुविधा देता है. पुराना और नया, दोनों एड्रेस साथ-साथ काम करते हैं, जिससे बदलाव आसान और बिना झंझट के हो जाता है. नया जीमेलएड्रेस आपके पुराने ईमेल का ही एक तरह का एलियास होता है. यानी दोनों पर मेल आते रहेंगे और आप कहीं भी किसी भी एड्रेस से साइन-इन कर सकते हैं. आपका सारा डेटा सेफ रहता है, ध्यान रखें कि नया एड्रेस बनाने के बाद एक साल तक उसमें कोई बदलाव या डिलीट नहीं किया जा सकता और पूरी जिंदगी में सिर्फ तीन बार ही यह बदलाव संभव है.

जीमेल एड्रेस कैसे बदलें?- सबसे पहले myaccount.google.com/ google-account-email पर जाकर अपने गूगल अकाउंट से लॉग इन करें. वहां अपने ल्द्धड्डद्बद्य एड्रेस के पास बने पेंसिल आइकन पर क्लिक करें. अब अपना नया यूजरनेम लिखें, जैसे newname@gmail.com और Ne&t पर टैप करें. इसके बाद गूगल आपकी पहचान कन्फर्म करने के लिए फोन या बैकअप ईमेल पर वेरिफिकेशन मांगेगा. सारी जानकारी चेक करने के बाद कन्फर्म करें, बदलाव तुरंत लागू हो जाएगा और पुराना व नया, दोनों एड्रेस काम करते

40 करोड़ साल पहले किनारे पर घूमते थे डायनासोर

नदियों का भी दूसरी प्राकृतिक चीजों की तरह ही एक लाइफ साइकिल होता है. नदियां वक्त के साथ बड़ी होती हैं, अपनी धारा बदलती हैं और फिर सूख जाती हैं. माना जाता है कि नदियां एक समय के बाद सूखती हैं लेकिन अब इस समझ को चुनौती मिली है. दुनिया की सबसे पुरानी नदी कई हजार साल से बह रही है.

यह ऑस्ट्रेलिया की फिंके नदी (स्थानीय भाषा में लारापिंटा) है. यह नदी 300 से 400 मिलियन साल यानी 30 से 40 करोड़ वर्ष पुरानी है, जो इसे दुनिया की सबसे पुरानी नदी बनाती है. दावा किया जाता है कि यह नदी डायनासोर से भी पुरानी है. यानी इसके आसपास कभी डायनासोर घूमते थे.

ऑस्ट्रेलिया के सूखे इलाके की यह नदी बाकी नदियों से अलग है. साल के ज्यादातर समय यह रेत और पानी के छोटे गड्ढों जैसी दिखती है, जिसमें बहुत कम पानी होता है. भूवैज्ञानिकों का कहना है कि यह दुनिया की सबसे अनोखी नदियों में से है. ऑस्ट्रेलिया के नॉर्दर्न टेरिटरी में बहने वाली फिंके को दुनिया की सबसे पुरानी नदी माना जाता है.

फिंके का भूवैज्ञानिक इतिहास इसे लगातार बहने वाली सबसे प्राचीन नदी प्रणालियों में से एक बनाता है. फिंके नदी मैक्डोनेल रेंजसे निकलती है, जो एलिस स्प्रिंग्सके पश्चिम में है. यह दक्षिण-पूर्व की ओर मध्य ऑस्ट्रेलिया को पार करते हुए सिम्पसन डेजर्टकी रेत में विलीन हो जाती है.

फिंके नदी एक मौसमी नदी है और केवल बारिश के बाद ही इसमें पानी आता है. लंबे समय तक सूखी रहने के बावजूद फिंके नदी मध्य ऑस्ट्रेलिया का महत्वपूर्ण प्राकृतिक हिस्सा है.

'वाइकिंग बेबी' की चाहत से पैदा हुआ बड़ा खतरा

दुनिया के सबसे खुशहाल और खूबसूरत देशों में शुमार डेनमार्क हालिया समय में एक अलग वजह से चर्चा में है. डेनमार्क ऐसा देश है, जहां हर 100 बच्चों में से एक बच्चा स्पर्म डोनेशन से पैदा होता है. दुनिया को स्पर्म निर्यात करने में भी 60 लाख की आबादी वाला यह स्कैंडिनेवियाई देश पावरहाउस माना जाता है. हालांकि इस इंडस्ट्री पर हालिया समय में कई सवाल उठे हैं. इस इंडस्ट्री के सियाह पहलू भी सामने आ रहे हैं.

डेनमार्क कई देशों में स्पर्म स्पर्म सप्लाई करता है. दुनियाभर की महिलाओं को डेनमार्क के गोरे, नीली आंखों वाले डोनर की तलाश रहती है. इसका फायदा उठाते हुए डेनमार्क की स्पर्म इंडस्ट्री दुनिया को 'वाइकिंग स्पर्म' निर्यात करती है, जिससे खूबसूरत स्वस्थ बच्चे पैदा हो सकें. इस इंडस्ट्री के सियाह पहलू का खुलासा तब हुआ, जब एक ऐसा डोनर 197 बच्चों का पिता बन गया, जिसमें कैंसर का म्यूटेशन था. एक हालिया जांच रिपोर्ट ने डेनमार्क की स्पर्म इंडस्ट्री के काले सच को उजागर किया है. रिपोर्ट बताती है ति एक डोनर ने 14 देशों की 67 क्लीनिकों के जरिए कम से कम 197 बच्चों को जन्म दिया. इन सभी बच्चों में एक जेनेटिक म्यूटेशनहै, जो एक जानलेवा कैंसर से जुड़ा है. इनमें से कुछ बच्चों की मौत भी हो चुकी है.

फोल्डेबल फोन लेना सही या नहीं?

फोल्डेबल स्मार्टफोन कभी सिर्फ एक टेक शोपीस माने जाते थे, लेकिन 2026 में यह टेक्नोलॉजी मेनस्ट्रीम बनने लगी है. (सैमसंग), (हुआवेई) और (मोटोरोला) जैसे ब्रांड्स ने इन्हें ज्यादा मजबूत, हल्का और भरोसेमंद बना दिया है. अब सवाल यह है कि क्या आम यूजर जो आईफोन और सैमसंग के महंगे फोन खरीद रहे हैं, उनके लिए फोल्डेबल फोन लेने का यह सही वक्त है. कीमत, मजबूती और रोजमर्रा के इस्तेमाल को देखते हुए इसका जवाब हर किसी के लिए अलग हो सकता है. यही वजह है कि फोल्डेबल फोन के फायदे और नुकसान समझना सबसे जरूरी है.

2026 में कितने बेहतर हो गए हैं फोल्डेबल फोन?- 2026 में फोल्डेबल स्मार्टफोन काफी प्रेक्टिकल हो गए हैं. यह गेम 2025 में लॉन्च हुए सैमसंग जेड फोल्ड 7 के बाद से बदला है. इस फोन को सैमसंग ने अपने सैमसंग गैलेक्सी S25 जितना पतला बना दिया है. यानी अब फोल्डेबल स्मार्टफोन मोटे और भारी नहीं रहे हैं. यह फ्लैगशिप फोन के डिजाइन में आने लगे हैं. इसके अलावा नई जेनरेशन के फोल्डेबल डिस्प्ले पहले से ज्यादा मजबूत हैं और उनमें क्रीज भी काफी कम दिखाई देती है. कंपनियों ने हिंज डिजाइन को बेहतर बनाया है जिससे फोन खोलने और बंद करने में स्मूद फील मिलती है. अब ये फोन पानी और धूल से भी काफी हद तक सुरक्षित हो गए हैं. सॉफ्टवेयर भी बड़ी स्क्रीन के हिसाब से बेहतर ऑप्टिमाइज किया गया है जिससे मल्टीटास्किंग आसान हो गई है.

किसके लिए सही है फोल्डेबल स्मार्टफोन?

अगर आप टेक्नोलॉजी पसंद करते हैं और बड़ी स्क्रीन पर काम या एंटरटेनमेंट चाहते हैं तो फोल्डेबल फोन आपके लिए शानदार विकल्प हो सकता है. बिजनेस यूजर, कंटेंट क्रिएटर और मल्टीटास्किंग करने वालों के लिए यह काफी फायदेमंद साबित हो सकता है. लेकिन अगर आप सस्ता, मजबूत और कम मेंटेनेंस वाला फोन चाहते हैं तो 2026 में भी नॉर्मल स्मार्टफोन ज्यादा समझदारी भरा विकल्प रहेगा. सही चुनाव आपकी जरूरत और बजट पर निर्भर करता है.